* आंकलन के प्रकार *

रचनात्मक आंकलन-

रचनात्मक आंकलन शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। शिक्षक के माध्यम से रचनात्मक आंकलन का प्रयोग भयमुक्त एवं सहयोगी वातावरण में विद्यार्थी की प्रगति की नियमित जाँच के लिए किया जाता है। रचनात्मक आंकलन विद्यार्थियों की सहभागिता पर बल देता है अर्थात विद्यार्थियों को अपने अधिगम के मूल्यांकन के साथ-साथ अपने सहपाठियों के सीखने में मूल्यांकन में भी सम्मिलित होना चाहिए।

रचनात्मक आंकलन में हम मात्रात्मक परिणामों के साथ-साथ उन जानकारियों का भी आखिरी निष्कर्ष का आधार बनाते है, जो समय-समय पर इकट्ठा की जाती है।

रचनात्मक आंकलन प्रत्यक्ष एवं त्वरित होता है। ऐसे आंकलन का परिणाम एवं सम्पूर्ण कक्षा के प्रदर्शन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है कि वे कितना अच्छा सीख सकते है।

रचनात्मक आंकलन का विद्यार्थियों की जरुरतों के अनुकूलन माध्यम के रूप में विकास किया गया है। रचनात्मक आंकलन पाठ-इकाइयों के साथ जोड़कर तथा नैदानिक आंकलन के तौर पर उपयोग किया जाता रहा है। रचनात्मक आंकलन का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को महत्व समीक्षा प्रदान करता है। रचनात्मक आंकलन का सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि अधिगम को एक सुखद अनुभूति बना देता है क्योंकि विद्यार्थी को सहभागिता उसकी सीखने की इच्छा को नहीं बढाती, बल्कि उसके मूल्यांकन की विधियों को ~~प्रचलित~~ प्रभावित

Scanned with CamScanner

करती है।

रचनात्मक आंकलन का परिणाम विद्यार्थियों को तनाव में नहीं डालता। इसके परिणाम का अभिलेख तो रखा जाता है, किन्तु ग्रेड नहीं दिया जाता है। विद्यार्थी अपने कार्य को स्वयं जाँच करता है तथा विषय-वस्तु और आंकलन के आधार के विषय में प्रश्न पूछने के लिए उसे प्रेरित किया जाता है।

योगात्मक आंकलन का उद्देश्य जहाँ शिक्षण के परिणामों को सिद्ध करना है, वहीं रचनात्मक आंकलन शिक्षण के परिणामों को सुधारने की ओर केन्द्रित रहता है। विद्यार्थियों को जो कुछ भी पढ़ाया जाता है, वही आंकलन में प्रतिबिम्बित होता है।

* रचनात्मक आकलन की विशेषताएँ

रचनात्मक आंकलन की कुछ मुख्य विशेषताएँ निम्नांकित हैं —

1. विद्यार्थियों में फीडबैक के आधार पर अपने कार्य में सुधार करने का अवसर प्रदान करता है।
2. विद्यार्थियों को स्वयं अपनी शिक्षा प्राप्ति में सक्रिय रूप से शामिल होने हेतु मंच उपलब्ध कराता है।
3. विद्यार्थियों को उन मानदण्डों को समझने हेतु प्रोत्साहित करता है, जिनका प्रयोग उनके कार्य को परखने हेतु किया जायेगा।
4. शिक्षकों को आंकलन के परिणामों को ध्यान में रखते हुए अध्यापन को समायोजित करने में समर्थ बनाता है।
5. प्रभावकारी फीडबैक की व्यवस्था करता है।
6. यह निदानात्मक तथा उपचारात्मक है।
7. शिक्षा प्राप्ति की विविध शैलियों को शामिल करता है।

Scanned with CamScanner

* योगात्मक आंकलन *

योगात्मक आंकलन से तात्पर्य अंक-आधारित परीक्षाओं से है, जिनमें हर सही उत्तर के लिए अंक दिये जाते हैं। योगात्मक आंकलन पाठ्यक्रम के खत्म होने पर वार्षिक अथवा अर्द्धवार्षिक तौर पर किया जाता है। योगात्मक आंकलन यह पता लगाने में पता करता है कि पाठ्यक्रम के अधिगम - उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त कर लिया गया है।

विद्यार्थी की संवृद्धि तथा उसके विकास का सारांशात्मक आकलन में कोई युक्तिसंगत पैमाना नहीं होता। ज्यादा-से ज्यादा वह एक समय पर उपलब्धि के स्तर को प्रमाणित करता है। कागज - कलम के माध्यम से परीक्षण बुनियादी रूप से आकलन या मूल्यांकन की सबसे ज्यादा प्रचलित विधि है, परन्तु किसी विद्यार्थी के विकास के बारे में जानने के लिए सिर्फ इसका सहारा लेना न सिर्फ अनुचित है, बल्कि अवैज्ञानिक भी है।

केवल मात्रात्मक परिणामों का फीडबैक देने का अर्थ है कि हम सिर्फ उन अंकों पर ध्यान देते हैं जो विद्यार्थी ने एक सीमित अवधि में हासिल किए हैं। यह अंक विद्यार्थी की क्षमता का सही संकेत नहीं देते।

सिर्फ शैक्षिक पहलुओं पर ध्यान देते हुए परीक्षा में प्राप्त अंक पर ज्यादा जोर देने से विद्यार्थी के मन में यह धारणा बैठ जाती है कि मूल्यांकन शिक्षा की प्राप्ति से अलग है जिसके परिणामस्वरूप 'सीखो' तथा 'भूल जाओ' की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। यह अस्वस्थ प्रतियोगिता को प्रोत्साहन देने के साथ साथ विद्यार्थी पर व्यर्थ बोझ भी डालता है।

Scanned with CamScanner